

&gt;

Title: Need to provide GI (Geographical Indication) to the Makrana Marble of Rajasthan.

**डॉ. ज्योति मिश्रा (नागौर):** शशापति मठोदय, मैं अपने संस्कृतीय क्षेत्र नागौर के मकराना शहर की ओर ध्यान आकर्षित कराना चाहती हूँ जो अपने मार्बल के लिए सर्वोत्तम प्रसिद्ध रहा है। मकराना मार्बल की खासियत पूरे संसार में फैली हुई है। विश्व प्रसिद्ध इमारतें जैसे आगरा का ताजमहल, कोलकाता का विकटोरिया मेमोरियल से लेकर टिलवाड़ा के विश्व प्रसिद्ध जैन मंदिरों तक अनगिनत इमारतें, मंदिरों, मरिजादों, चर्चों में मकराना मार्बल शोभा बढ़ा रहा है। भूमध्य भारित्रियों व पत्थर के जानकारों का मत है कि मकराना का मार्बल विश्व में सबसे पुण्या व सबसे बेहतरीन किरण का है। यह 90 प्रतिशत से ज्यादा शुद्ध कैलिङ्गम कार्बोनेट है, जिसमें पानी की सीपेज विलकृत नहीं होती। यह बहुत कठोर होते हुए भी नढ़ाई के लिए सर्वोत्तम है। इसकी सतह पर एक भी पिनडोत या रक्फ़ैचेज बहुत कम होते हैं, जिसकी वजह से यह सीधे ही उपयोग किये जाने योग्य होता है। इसकी खासियत है कि इसमें किसी किरण के कैमिकल की जड़त नहीं पड़ती और सटियों बाट भी इसकी सफेदी बनी रहती है। मकराना में लगभग 56 मिलियन टन मार्बल का अंडार है, जिससे लाखों लोग अपना रोजगार पूरे भारत में ही नहीं, दूसरे देशों में भी चलाते हैं। इससे हर साल करोड़ों रुपये का रिवेन्यू प्राप्त होता है।

मठोदय, इन सब विशेषताओं के बाट भी आज मकराना मार्बल अपने आरितत्व के लिए जूँझ रहा है। मकराना मार्बल उद्योग की सबसे बड़ी प्रेरणानी उसके रैखूप के डिस्पोजल से लेकर उसके नाम से नकली मार्बल बेते जाने तक की है।

मेरा सदन के माध्यम से आगृह है कि इतनी सारी खूबियों और मकराना मार्बल के नाम से अन्य मार्बलों को बेते जाने से रोकने के लिए आवश्यक है कि मकराना मार्बल को जियोग्राफिकल इंडीकेशन दिया जाये, जिससे मकराना मार्बल की विश्व-प्रसिद्धि बरकरार रहे और इससे एक सामूहिक, सामुदायिक अधिकार की प्राप्ति मकराना को प्राप्त हो सके।